"संगीत सत्र" द्वारा आयोजित 15वें रसेश्वर सैकिया बरबायन सत्रीय पुरस्कार समारोह पर माननीय राज्यपाल श्री गुलाब चंद कटारिया जी का संबोधन

दिनांक 8 जुलाई 2023, शनिवार	**समय : 06:00 PM**	**स्थान : श्रीमंत शंकरदेव कलाक्षेत्र**

नमस्कार,

- मंच पर विराजमान पद्मश्री जतिन गोस्वामी जी,
- पद्मश्री घन कान्त बोरा बरबायन जी,
- संगीत नाटक अकादमी के सचिव श्री राजू दास जी,
- श्रीमंत शंकरदेव कला क्षेत्र के सचिव श्री सुदर्शन ठाकुर जी,
- संगीत सत्र की अध्यक्षा श्रीमती स्वप्नाली बरुवा जी,
- रसेश्वर सैकिया बरबायन सत्रीय पुरस्कार से सम्मानित श्री करुणा बोरा जी,
- श्री शशधर आचार्य जी,
- और उपस्थित देवियों और सज्जनों,

सबसे पहले मैं श्रीमंत शंकरदेव और श्रीश्री माधव देव - दोनों महापुरुषों के श्रीचरणों में शत्-शत् प्रणाम करता हूँ।

आज "संगीत सत्र" के इस महत्वपूर्ण कार्यक्रम में शामिल होकर मुझे अत्यंत प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है।

मुझे बताया गया है कि यह असम की एक सांस्कृतिक संस्था है, जो लगभग पांच दशकों से "सत्रीय नृत्य" को आगे बढ़ाने का काम कर रही है। इसने कई कीर्तिमान स्थापित भी किए हैं। "सत्रीय नृत्य" को राष्ट्रीय मान्यता दिलाने में इसका महत्वपूर्ण योगदान रहा है। असम का सत्रीय नृत्य आज भारत का आठवां शास्त्रीय नृत्य है।

आज के इस पावन अवसर पर मैं इस ऐतिहासिक संस्था के संस्थापकों की पवित्र स्मृति को नमन व वंदन करता हूं, जिन्होंने अपनी कड़ी मेहनत और त्याग से इसे खड़ा किया, जो आज एक वट-वृक्ष के रूप में सभी को शीतल छाया दे रही है।

इस मौके पर मैं असम के महान पंडित एवं विद्वान डॉ. महेश्वर नेओग जी का नाम आदर के साथ लेना चाहूँगा, जिन्होंने संगीत सत्र की स्थापना के लिए बौद्धिक पूंजी प्रदान की तथा बरबायन रसेश्वर सैकिया जी ने सत्रीय नृत्य सिखाने का काम संभाला था। मुझे यह भी बताया गया है कि इस संस्था को राज्य की अनेक जानी-मानी हस्तियों का सहयोग और समर्थन मिला है, जिनमें डॉ. प्रमोद भट्टाचार्य जी और डॉ. बीरेंद्रनाथ दत्त जी प्रारंभ से जुड़े हुए हैं।

इस अवसर पर मैं उन्हें हृदय से कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ। उनके अलावा स्वनामधन्य श्री राधा गोविंद बरुआ, श्री रुद्र बरुआ, श्री केशब महंत, श्री केशब चांगकाकोटी, श्री अतुल बरुआ सहित सभी महानुभावों को स्मरण करता हूँ, जिन्होंने संस्था की श्रीवृद्धि में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

मित्रों,

प्रात:स्मरणीय श्रीमंत शंकरदेव और श्री माधवदेव-दोनों असम के महान संत हैं। उन्होंने वैष्णव धर्म के प्रचार-प्रसार के साथ ही असमिया समाज को शिक्षा और संस्कार से उन्नत बनाने का कार्य किया। उनका धर्म एवं अध्यात्म में जितना प्रभाव था - नृत्य, नाटक, गीत, चित्रकला, हस्तशिल्प में भी उतना ही प्रभाव था। उन्होंने सत्रीय परम्परा को एक विशेष पहचान दिलाई है।

दोनों महापुरुषों ने "नामघर" और "सत्र" की स्थापना कर केवल आध्यात्मिक ज्ञान ही नहीं दिए, बल्कि समाज को एक सूत्र में बांधने का अतुलनीय कार्य भी किया। श्रीमंत शंकरदेव ने पूरे भारत का तीर्थाटन कर धर्म के सार-तत्वों को अर्जित की। उन्होंने पंद्रहवीं और सोलहवीं शताब्दी में पूरे भारतवर्ष में चल रहे

भक्ति आंदोलन के एक महत्वपूर्ण हिस्से के रूप में असम को सांस्कृतिक और आध्यात्मिक रूप से मुख्यधारा से जोड़ा।

असम की इस पुण्यभूमि पर जन्म लेने वाले दोनों महापुरुषों ने असम के साथ-साथ भारतवर्ष की भी खूब प्रशंसा की। कहने का तात्पर्य यह है कि दोनों गुरुजनों के हृदय में ईश्वर के प्रति अगाध प्रेम और भक्ति होने के साथ-साथ मातृ-भूमि के प्रति भी स्नेह भरा हुआ था।

देवियों और सज्जनों,

"सत्रीय नृत्य" ईश्वर के प्रति प्रेम और समर्पण का का ही प्रतीक है। इस नृत्य के माध्यम से भगवान राम और भगवान कृष्ण की स्तुति की जाती है। नृत्य और अंकिया नाटकों के माध्यम से, सनातन धर्म के संदेशों और सार-तत्वों को कहानियों के रूप में प्रसारित किया जाता है, ताकि सर्वसाधारण आध्यात्मिक ज्ञान का अमृत प्राप्त कर सके।

मित्रों,

युवाओं को हमारी गौरवशाली परंपराओं से अवगत कराने की आवश्यकता है। मैं समझता हूँ कि इसके लिए संगीत सत्र समर्पण भाव से काम कर रहा है और आगे भी करता रहेगा। प्रारंभ से ही इस संस्था का एक उच्च स्थान रहा है। मेरी दृष्टि में यह संस्था मेरे असम के लोगों के लिए एक प्रकार से तीर्थस्थल है।

मुझे खुशी है कि वर्तमान में संगीत सत्र के प्रचार और प्रसार की गति में काफी तेजी आई है। इन दिनों संगीत सत्र से संबद्ध केंद्रों की संख्या 223 तक बढ़ चुकी है। यह एकमात्र संस्था है जो 173 परीक्षा केंद्रों के माध्यम से सत्रीय नृत्य और संगीत की परीक्षा आयोजित करती है।

मुझे बताया गया है कि पाठ्यक्रम पहले दो वर्षों के लिए प्रारंभिक शिक्षा से शुरू होता है और यह अगले पांच वर्षों तक चलता है, जब तक कि छात्र नृत्य और/या संगीत में "गुनिन" नहीं बन जाता। पिछले पचास वर्षों में संगीत सत्र और इसके संबद्ध केंद्रों के माध्यम से लगभग पचास हजार छात्रों को सत्रीय नृत्य और संगीत में दीक्षित किया गया है, जो अत्यंत सराहनीय है।

मुझे यह भी जानकारी मिली है कि संस्था की महासचिव श्रीमती रंजुमणि सैकिया सहित दो शिक्षकों और दो छात्रों को अब तक प्रतिष्ठित "संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार" से सम्मानित किया जा चुका है। साथ ही कई लोगों ने विदेश और देश के विभिन्न राज्यों में भी सत्रीय नृत्य और संगीत का प्रदर्शन किया है। इस अवसर पर उन सभी को मैं बधाई देना चाहता हूँ और आशा करता हूँ कि वे राज्य और देश की सांस्कृतिक ध्वज को हमेशा ऊंचा रखें।

यह प्रसन्नता का विषय है कि संगीत सत्र वर्ष 2009 से सत्रीय नृत्य और अन्य शास्त्रीय नृत्यों के दिग्गजों को प्रतिष्ठित बरबायन रसेश्वर सैकिया पुरस्कार से सम्मानित करता आ रहा है। इस वर्ष के पुरस्कार विजेता श्री करुणा बोरा और श्री शशधर आचार्य जी को मैं हृदय से बधाई और शुभकामनाएं देता हूं।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि आने वाले दिनों में इस संस्था की गतिविधियां और भी व्यापक होगी तथा यह सत्रीय नृत्य व संगीत का एक राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय केंद्र बनने में सक्षम होगी। अंत में, मैं कार्यक्रम के आयोजकों सहित संस्था के सभी पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं को हृदय की गहराइयों से एक बार पुन: धन्यवाद देता हूं।

जय हिन्द !